International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

कच्ची बस्ती के बालकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में आने वाली बाधाओं का अध्ययन

"A Study of Obstacles in Universalizing Primary Education of Slum Children."

डॉ. मनीष सैनी[1], निशा शर्मा[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

Dr. Manish Saini, Assistant Professor, Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur
Nisha Sharma, B.Ed. M.Ed. Student, Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

---

सारांश :–

प्रस्तुत शोध में कच्ची, बस्तियों, बालकों का प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण मे आने वाली बाधाओं का अध्ययन किया गया है। कच्ची बस्ती के बालकों की शैक्षिक समस्याओं के सम्बन्धों के मापन हेतु शहरी व ग्रामीण कच्ची बस्तियों के 250 बालक–बालिकाओं को आधार बनाया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु अध्ययन मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा सहसम्बन्ध सांख्यिकी प्रविधियों को प्रयुक्त किया गया है। विश्लेषण करने के उपरान्त पाया गया कि कच्ची बस्तियों के बालकों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है।

की वर्ड :–कच्ची बस्तियां,प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का सार्वभौमीकरण

प्रस्तावना–

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक शिक्षा का अपना एक विशेष स्थान होता है। शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में ज्ञान, अवबोध क्षमता, रूचि, कौशल तथा अभिवृत्ति का पता लगाकर उन्हीं के अनुरूप विकास प्रक्रिया में सहयोग दें। प्राथमिक शिक्षा की नींव पर ही समस्त शिक्षा का भव्य भवन निर्मित होता है। अतः प्राथमिक शिक्षा की नींव सुदृढ़ होना आवश्यक है।

विगत दो दशकों से सम्पूर्ण विश्व का ध्यान शिक्षा की तरफ केन्द्रित है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह प्राधान किया गया कि 6 से 14 वर्ष के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा करने का प्रयास करेगी।

कच्ची बस्तियों से सम्बन्धित किसी भी विचार के उत्पन्न होने पर हमारे मस्तिष्क में गंदे, अस्वास्थ्यवर्धक, कच्चे मकानों में रहने वाले लोगों का समृद्ध बिम्बित होता है।

लेकिन इन बस्तियों के बच्चे आज भी शिक्षा से वंचित है। आज के दौर में शिक्षा बाजारवाद और निजीकरण की भेट चढ़ती जा रहीं है। शिक्षा दिनोदिन महंगी होने की वजह से गरीब मजदूर व कच्ची बस्तियों में रहने वाले परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा हासिल करना एक सपना बन गया है।

अध्ययन से पाया गया कि कच्ची बस्तियों में रहने वाले अभिभावक निरक्षर होने के कारण उनके बच्चें शिक्षा के प्रति हम जागरूक पाये गये तथा बच्चों के आर्थिक गतिविधियों ने व्यक्त रखते है। यथा श्रम आदि करवाते है जिससे वे विद्यालय नहीं जा पाते है लेकिन एक बात संतोषप्रद है कि इन अभिभावकों का शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।

इन कच्ची बस्तियों के अभिभावकों को शिक्षा के लिए चल रहीं योजनाओं व नीतियों के बारे में जानकारी व होने से वे बालकों को उच्च शिक्षा की ओर फख नहीं कर पाते है और बालकों को आर्थिक गतिविधियों में व्यक्त रखते है।

समस्या का औचित्य–
इन बस्तियों में निवास करने वाले अधिकांश नागरिक दैनिक श्रम कार्य अथवा अन्य छोटे मोटे कार्य करके अपना गुजारा करते है। अधिकांश नागरिकों के बच्चे भी विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में नौकरी अथवा अन्य श्रम कार्य करते है।

उल्लेखनीय है कि अधिकांश बाल श्रमिकों के श्रम की प्रकृति बंधुआ मजदूरी की होती है। शोधकर्त्री विगत कुछ समय से इन समाचारों पर संज्ञान लेती रही और इन क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों की शिक्षा हेतु लगातार चिंतन करती रही है और हमेशा यह जानने को उत्सुक रही है, क्या कारण है, जो कच्ची बस्तियों में रहने वाले बालकों की शिक्षा में बाधा बने हुए है। अतः इन कारणों को जानने हेतु शोधकर्त्री ने प्रस्तुत समस्या का चुनाव किया है।

सम्बन्धित साहित्य :–

1. भारद्वाज, अजय (2022)– वाराणासी शहर के स्लम बच्चों के प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति और निर्धारक मामले का अध्ययन। उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय स्तर पर झुग्गी झोपड़ियों के बच्चों में स्कूली शिक्षा, ड्रॉपआउट, स्कूली शिक्षा न होने की स्थिति और कारकों की पहचान करना। निष्कर्ष झुग्गी झोपड़ वाले परिवार निम्नलिखित कारणों से अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में भेज रहे है, निजी स्कूल अधिक महंगे है। इस कथन से 62 प्रतिशत परिवार सहमत थे। शिक्षा के लिए लगभग 53 प्रतिशत परिवार सहमत थे और लगभग 20 प्रतिशत परिवार इस कथन से अहसमत थे।

2. बी. रजिया (2021)– मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों में प्रारम्भिक शिक्षा के अभाव के कारण का अध्ययन। उद्देश्य बच्चों (6 से 14 वर्ष) की स्कूल स्थिति का अध्ययन। मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के नामांकन न होने के कारणों की जांच करना। मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के स्कूल छोड़ने के कारणों की पहचान करना। निष्कर्ष यह पेपर गैर–नामांकन और स्कूल छोड़ने के सम्बन्ध में अलीगढ़ की झुग्गी झोपड़ी के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं पर प्रकाश डालता है। इस अध्ययन में छोटे भाई बहनों की देखभाल, पैदल दूरी के भीतर स्कूलो की अनुपलब्धता और घरेलू कार्यों में व्यस्त रहने वाले बच्चों के नामांकन न होने के लिए गरीबी प्रमुख कारण के रूप में उभरी है। इस तरह गरीबी, खराब, शैक्षणिक प्रदर्शन और पढ़ाई में रूचि की कमी स्कूल छोड़ने के प्रमुख कारण उभरे।

3. बसंत कुमार, एस. (2021)– स्लम बच्चों के बीच संबंधित शारीरिक मनोवैज्ञानिक और प्रदर्शन चर पर छोटे पक्षीय फुटबॉल प्रशिक्षण का प्रभाव। उद्देश्य स्लम क्षेत्र के स्कूली बच्चों के बीच चयनित शारीरिक, शारीरिक मनोवैज्ञानिक और प्रदर्शन चर पर 20/20 क्षेत्र लघु पक्षीय फुटबॉल प्रशिक्षण की प्रभावशीलनता का पता लगाना।यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्रायोगिक प्रशिक्षक 20/20 क्षेत्र (एसएसएफटी 20/20) के लिए छोटे पक्षीय फुटबॉल प्रशिक्षण और 30/40 (एसएसएफटी 30/40) के लिए छोटे पक्षीय फुटबॉल प्रशिक्षण ने चयनित भौतिक चर में महत्वपूर्ण सुधार किया।

4. राहुल अमीन (2021) – असम में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण पर एक अध्ययन। उद्देश्य जैसा कि हम जानते है कि प्रारम्भिक शिक्षा का बुनियादी या आधारभूत चरण है, जिसके बच्चे पर उसके शैक्षिक जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का यह चरण संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के निर्माण खण्ड के रूप में कार्य करता है। राज्य सरकार ने कई योजनाएं नीति या हस्तक्षेप शुरू किये जिनकी चर्चा पहले ही ऊपर की जा चुकी है। यदि हम सरकार द्वारा की गई इन विभिन्न पहलुओं पर गौर करें तो हम प्रारम्भिक शिक्षा के महत्व और बच्चों की संपूर्ण शिक्षा पर इसके प्रभाव को माप सकते है।

5. डॉ. प्रदीप कुमार तिवारी (2021)– प्राथमिक शिक्षा लोकव्यापीकरण : समस्या व समाधान। निष्कर्ष उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत देश में प्राथमिक एवं अनिवार्य शिक्षा के लोकव्यापीकरण की प्रक्रिया शिथिल है और इसकी शिथिलता के लिए जिम्मेदार कारक किस प्रकार से कार्यरत है। देश के विकास के लिए आवश्यक है कि देश के सभी नागरिक शिक्षित हो तथा शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक शैक्षिक विधियों एवं सहायक सामग्रियों का भरपूर उपयोग हो।

समस्या कथन–
कच्ची बस्ती के बालकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में आने वाली बाधाओं का अध्ययन।
शोध के उद्देश्य–

- शहरी और ग्रामीण कच्ची बस्ती के बालकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।

- शहरी और ग्रामीण कच्ची बस्तियों के अभिभावकों की सार्वभौमीकरण के लिए चल रही योजनाएं और नीतियों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के बालकों की शैक्षिक समस्या तथा अभिभावकों की निरक्षरता के कारण प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण मे आने वाली बाधाओं का अध्ययन किया है। इसमे शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियोंके 250 विद्यार्थियों व अभिभावकों को शामिल किया गया है। वर्तमान में समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क करना संभव नहीं है अतः न्यादर्श चयन की विधि को अपनाया है। फलस्वरूप हमारे परिणाम भी अधिक विश्वसनीय एवं परिशुद्ध हो सकते है।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि ऐसे अध्ययन के लिए प्रयुक्त की जाती है जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान काल में सामान्य स्थिति व व्यवहार क्या है।

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। उपयुक्त घटकों के निर्धारण के पश्चात प्रश्नों का निर्माण व प्रश्नों की भाषा सरल व स्पष्ट रखी गई है। विद्यार्थियों में सार्थक अंतर निकालने के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया है।

परिकल्पना–1 ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के बालकों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	परिणाम
शहरी क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के बालक	125	7.5	1.55	2.85	अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के बालक	125	6.5	1.61		

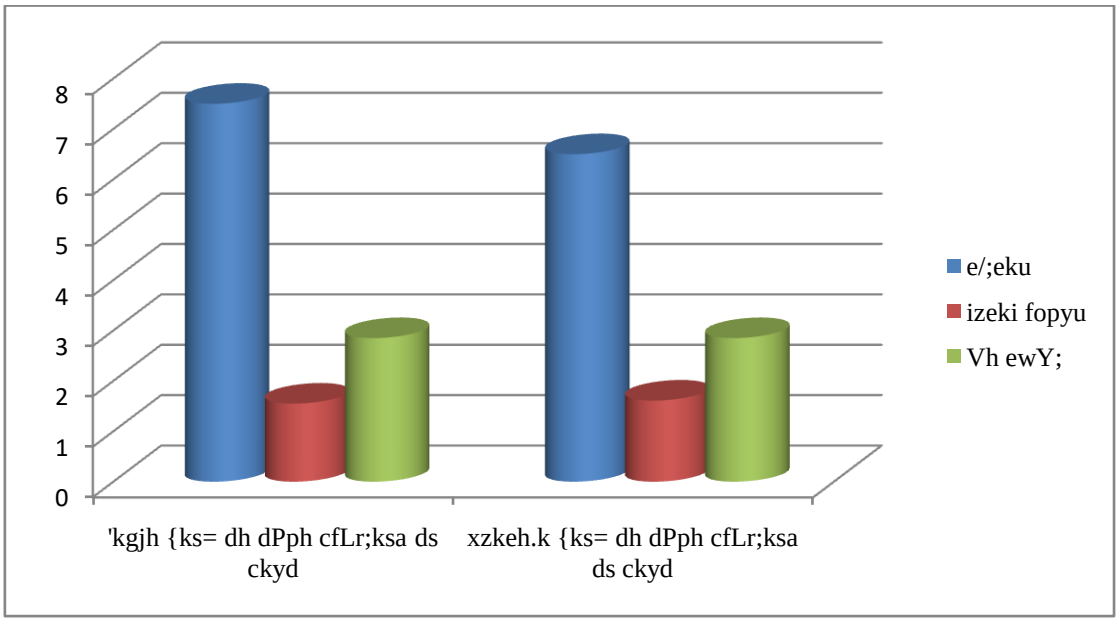

परिणाम :–

उपरोक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि कत्रि 78 पर टी का तालिका मूल्य 2.85 प्राप्त हुआ है। कत्रि 78 व सार्थकता स्तर पर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी मूल्य 1.99 है। गणना से प्राप्त मान 2.85, सारणी से प्रापत मान 1.99 से अधिक है। इस प्रकार कह सकते है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के बालकों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–2 शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के अभिभावकों की सार्वभौमीकरण के लिए चल रही योजनाओं व नीतियों के प्रति में सार्थक अन्तर नहीं है।

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	परिणाम
शहरी क्षेत्र की कच्ची बस्ती के अभिभावक	125	7.3	1.47	4.11	स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्ती के अभिभावक	125	5.9	1.25		

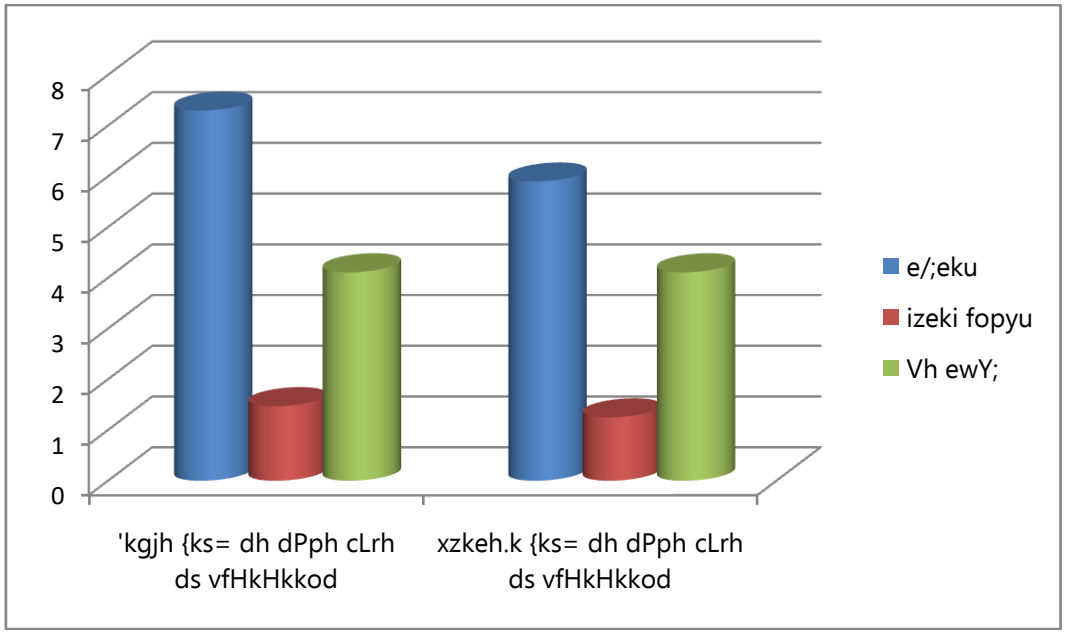

परिणाम :–

उपरोक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि कत्रि 58 पर टी का तालिका मूल्य 4.11 प्राप्त हुआ है। कि त्र 58 व सार्थकता स्तर पर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी मूल्य 2.0 है। गणना से प्राप्त मान 4.11, सारणी से प्रापत मान 2.0 से अधिक है। इस प्रकार कह सकते है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची बस्तियों के अभिभावकों की सार्वभौमीकरण के लिए चल रही योजनाओं व नीतियों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

बच्चे अत्यन्त कम उम्र में ही आथ्रिक कार्यों में लग जाते है। फलतः उकनी सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की ही बनी रहती है। अतः कच्ची बस्तियों की दशा को सुधारने के लिए उसमें निवास करने वाले बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना और उनकी शैक्षिक समस्याओं को जानकर उनका निराकरण करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत शोधकार्य के परिणाम उनकी शैक्षिक समस्याओं और व्यावसायिक आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाने एवं इनके प्रति समाज के लोगों के दृष्टिकोण को बदलने में भी सहायक सिद्ध होगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- *https://hindi:indiaoaterportal.org/articals/malania-basatai-month-shikshaseaq.*
- *अम्बिका सिंह शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपूर नगर, उत्तरप्रदेश, भारत*
- *निधि शर्मा, शोधार्थी पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी,उदयपुर राजस्थान.*
- *https://rmcollegebed.org/downloads/55-2.*
- *https://www.yourdictonary.com/articals/researchpapers-formate-examples.*